ISSN:2583-8849

चरनदास

1-

अपना हरि बिन और न कोई॥
मातु पिता सुत बंधु कुटुंब सब, स्वारथ ही के होई।
या काया कूँ भोग बहुत दै, मरदन करि करि धोई॥
सो भी छूटत नेक तनिक सी, संग न चाली वोई।
घर की नारि बहुत ही प्यारी, तिनमें नाहीं दोई॥
जीवत कहती साथ चलूँगी, डरपन लागी सोई।
जो कहिये यह द्रव्य आपनी, जिन उज्जल मति खोई॥
आवत कष्ट रखत रखवारी, चलत प्रान लै जोई।
या जग में कोई हितू न दीखै, मैं समझाऊँ तोई॥
चरनदास सुकदेव कहैं यों सुनि लीजै नर लोई।

2-

सुद्धि-बुद्धि सब गई खोय री मैं इस्क दिवानी।
तलफ़त हूँ दिन-रैन ज्यों मछली बिन पानी॥
बिन देखे मोहिं कल न परत है देखत आँख सिरानी।
सुधि आये हिय में दव लागै नैनन बरखत पानी॥
जैसे चकोर रटत चंदा को जैसे पपिहा स्वाती।
ऐसे हम तलफ़त पिय दरसन बिरह बिथा यहि भाँती॥
जब ते मीत बिछोहा हूवा तब ते कछु न सुहानी।
अंग-अंग अकुलात सखी री रोम-रोम मुरझानी॥
बिन मनमोहन भवन अँधेरी भरि भरि आवै छाती।
चरनदास सुकदेव मिलावो नैन भये मोहिं घाती॥

3-

साधौ टेक हमारी ऐसी।
कोटि जतन करि छूटै नाहीं करी अब कैसी॥
यह पग धरो सँभाल अचल होइ बोल चुके सोइ बोलै।
गुरु मारग में लेन न देनो अब इत उत नहिं डोलै॥
जैसे सूर सती अरु दाता पकरी टेक न टारैं।
तन करि धन करि मुख नहिं मोड़ैं धर्म न अपनो हारैं॥
पावक जारों जल में बोरो टूक-टूक करि डारो।
साध सँगति हरि भक्ति न छोडूँ जीवन प्रान हमारो॥
पैज न हारूँ दाग न लागे नेक न उतरे लाजा।
चरनदास सुकदेव दया से सब विधि सुधरैं काजा॥

4-

साधो राम भजै ते सुखिया।
राजा परजा नेमी दाता सबहीं देखे दुखिया॥
जो कोई धनवत जगत में राखत लाख हज़ारा।
उनकूँ तौ संसय है निसिदिन बटन बढ़त ब्यौहारा॥
जिनके बहु सुत नाती कहिये और कुटुंब परिवारा।
वे तो जीवन मरन के काजै भरत रहैं दुख भारा॥
नेमी नेम करत दुख पावैं कर स्नान सबेरा।
दाता कूँ देबे का दुख है जब मंगतौ ने घेरा॥
चारि बरन में कोउ न देखो जाको चिंता नाहीं।
हरि की भक्ति बिना सब दुख है समझ देख मन माहीं॥
सत संगति अरु हरि सुमिरन करि सुकदेवा गुरु कहिये।
चरनदास बिपदा सब तजि के आनंद में नित रहिये॥